आरती श्रीसंगमनाथाची ९८

जयदेव जयदेव जय संगमनाथा।। केतिकप्रिय तुज आरती ओवाळिन आतां।।धु.।। ब्रह्मदेव सृष्टि निर्माण करून। घ्यावा विसांवा म्हणुनी हुडिकतसे स्थान।। केतिकवनीं त्या ठायी केलें अनुष्ठान। यास्तव उद्भवला लिंगाकृति बाण।।१।। प्रात:काल समर्थ लिंग देखियलें। प्रेमें करोनि ब्रह्मा तयासि पूजियलें। कमंडलुचे जलानें अभिषेक केले। अमृतकुंड म्हणुनी तीर्थ तें जाहलें।।२।। एक्या भावे कोणी तीर्थी जे नहाती। नासुनि पातक त्याचें पावे त्वरित गति। देह समंधी पीडा रोगादिक जाती। पृथ्वीवरील तीर्थें त्या ठायीं वसतीं।।३।। उभय संगम म्हणुनी संगमेश नांव। पृथ्वीवर नाहीं तुजसारखा देव। माणिकदास शरण तुज एक्या भाव। सदानंद आतां मजलागीं पाव।।४।।